ISSN 2581 - 8163

ANVEEKSHA RESEARCH JOURNAL OF SSKGDC

(A Peer Reviewed Journal)

ARJ SSKGDC

VOL. 4, ISSUE 1, 2021

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, PRAYAGRAJ

(A Constituent College of University of Allahabad)

Accredited 'A' Grade by NAAC

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

			पृष्ठ सं.
1.	From the desk of the Editor	Prof. Lalima Singh	1
2.	अन्वीक्षा-अन्तर्दृष्टि	डॉ० मंजरी शुक्ला	3
3.	Revisiting the Implications of David Hume's Skepticism	Prof. Indoo Pandey Khanduri	4
4.	Hermeneutics in the Vedanta of Sankaracaarya	Prof. J.S. Dubey	16
5.	दक्षिण कोसल की शिल्पकला में रूपायित महाभारत कथा	प्रो० (डॉ) आर.एन. विश्वकर्मा	28
6.	महात्मा गाँधी और सामाजिक-नव निर्माण अहिंसा के विशेष परिप्रेक्ष्य में एक समीक्षात्मक विवेचन	डॉ० अविनाश कुमार श्रीवास्तव	40
7.	भारत-विभाजन की एक अनोखी दास्तान : 'बदला'	डॉ० रमेश चन्द्र शुक्ल	53
8.	२१वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में पर्यावरण-विमर्श	डॉ० नौनिहाल गौतम	62
9.	स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में धर्म	डॉ० रंजना शर्मा	70
10.	एकात्म मानववाद का मूलाधार : वैदिक वाङ्मय	डॉ० स्मिता अग्रवाल	74
11.	साहित्य-सिद्धान्त की पृष्ठभूमि एवं परंपरा	डॉ० किरण तिवारी	79
12.	नवगीत के विविध आयाम	डॉ० मंजू सिंह	86
13.	Simone de Beauvoir : Philosopher and Feminist	Dr. Sameema Zahra	98
14.	Interpretation of Buddhist Iconography with special Reference to *Stupa*	P.S. Harish	115
15.	प्रो० संगम लाल पाण्डेय का लोकात्म दर्शन या लोकायन दर्शन	डॉ० उत्तम सिंह	122
16.	A Husserlian analysis of the horizon-structure of experience in case of 'hermeneutical injustice' and 'epistemic marginalization'	Dr. Hora Zabarjazisar	128

Scanned with CamScanner

21 वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में पर्यावरण–विमर्श

डॉ. नौनिहाल गौतम,
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

पर्यावरण प्राचीन काल से ही साहित्य का अभिन्न अंग रहा है। 21 वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में पर्यावरण पर पर्याप्त विचार किया गया है। प्रकृति के अनियंत्रित दोहन और मानवकृत कुचेष्टाओं के कारण उत्पन्न हुई पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं और हाल ही में कोरोना जैसी घातक महामारी ने पर्यावरण को बचाने की सारस्वत पहल करने के लिए बुद्धिजीवियों को प्रेरित किया है।यहाँ तक कि कवियों ने कई काव्य कोरोना पर केन्द्रित रचे हैं। संस्कृत कवि भी इस शताब्दी में समाज को सचेत करने में निरंतर अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। इसकी प्रस्तुति इस शोधपत्र में अपेक्षित है।

पर्यावरणीय तत्त्वों का महत्त्व ऋषियों को भली–भाँति ज्ञात था। पर्यावरण के प्रति उनके दृष्टिकोण की एक छटा मांगलिक कार्यक्रमों में प्रयुक्त होने वाले इस मन्त्र में दृष्टिगोचर होती है–

'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।'[1]

ऋषियों की स्पष्ट मान्यता है– 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् सबको आश्रय देने वाली यह भूमि मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र। इस कारण इस पर निवास करने वाले प्राणिमात्र एवं समस्त प्राकृतिक तत्त्व मेरे कुटुम्बी जन (वसुधैव कुटुम्बकम्) की तरह हैं।

वर्तमान में पर्यावरण विमर्श पर दो शब्द प्रचलन में हैं चेतना और संरक्षण। चेतना की अपेक्षा संरक्षण पद अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि चेतना होने पर भी सामर्थ्य के अभाव में व्यक्ति संरक्षण नहीं कर सकता। चेतना होने पर व्यक्ति संरक्षण करने को प्रेरित होता है और अपनी सामर्थ्य से संरक्षित करता है। अतः संरक्षण पद चेतना और सामर्थ्य के सहभाव को दर्शाने के कारण अधिक महत्त्वपूर्ण है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी पर्यावरण को आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक के समुदित रूप में मानते हैं।[2] कुछ विद्वान् पर्यावरण को सांस्कृतिक और प्राकृतिक भेद से दो प्रकार का मानते हैं। यहाँ केवल पंच महाभौतिक सृष्टि वाले पर्यावरण के संबंध में विवेचन प्रस्तुत है।प्राचीन साहित्य में पर्यावरण के स्थान पर निसर्ग या प्रकृति शब्द मिलते हैं। यह प्रकृति (पर्यावरण) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, इन पाँच रूपों वाली है।[3]

Scanned with CamScanner